इंग्लैंड में गांधी जी जब आईने के सामने बाल संवारते थे, गीता के श्लोक याद कर लेते थे, ऐसा था उनका प्रबंधन

डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने गांधीकथा सुनाई, बापू के चित्र दिखाए और मधुर गीत प्रस्तुत किए

जानिए गांधी को

सिटी रिपोर्टर . इंदौर

यह गांधी कथा थी, किसी सरल रेखा में नहीं बल्कि चारों तरफ से खुलती हुई कथा। जैसे वेदों में कहा गया है कि उदात्त विचार चारों दिशाओं से आने दो, इस खुली और खिलती कथा में महात्मा गांधी के उदात्त विचार कहानी की चारों दिशाओं से आ रहे थे। इस कार्यक्रम में मंच सज्जा से लेकर प्रस्तुतकर्ताओं की वेशभूषा और कहने के अंदाज में एक ऐसी सादगी और गरिमा थी जो गांधी कथा के लिए उपयुक्त थी। यह गांधीकथा जाल सभागृह में बहुत सरल और मर्मस्पर्शी गीतों, गांधी के जीवन प्रसंगों और विचारों को चित्रों के साथ इस तरह से कही गई कि श्रोता गांधीकथा के मर्म को समझ सकें और अपने जीवन में उतारकर बेहतर बदलाव कर सकें। इसे नई दिल्ली की विचारक डॉ. शोभा राधाकृष्ण ने सुनाई। शासकीय संगीत महाविद्यालय के सहयोग से मप्र संस्कृति विभाग की इस कथा में प्रसंग से जुड़े भावों व्यक्त करते गीतों को स्वाति भगत और दीपक कालरा ने प्रस्तुत किया।

डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने कहा कि गांधी ने चार सामूहिक कर्म के जरिए आमूलचूल बदलाव लाए। और यह इसलिए संभव हुआ कि उनके व्यक्तित्व में चुंबकीय शक्ति थी क्योंकि उनके कर्म और विचारों में कोई खाई नहीं थी। उन्होंने चार सामूहिक कर्म, पहला सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक सफाई, सामूहिक भोजन और सामूहिक कताई के जरिए अमूल्य मंत्र दिए।

डॉ. शोभा राधाकृष्ण ने कहा कि गांधी ने मौन,उपवास, चरखे के जरिए राजनीति को आध्यात्मिकता से जोड़ा और सत्य-अहिंसा के पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया और अभय का मंत्र दिया।जब इसके बाद स्वाति और दीपक ने गीत गाए। कुछ गीतों के बोल थे आंख पवित्र रख, सत्य ही तू बोल, ईश्वर साक्षात अंतर टटोल, हम मिथ्या वचन कभी ना बोलें, हम वाणी में विष ना घोलें, एकबार मिलकर जुल्म ना करें कबूल। इसके बाद उन्होंने कहा कि जब गांधी इंग्लैंड गए तो आईने के सामने खड़े होकर दस मिनट तक अपने बाल संवारते थे लेकिन इस 10 मिनट का सुदुपयोग करते हुए वे गीता के श्लोक याद लिया करते थे। उनका समय प्रबंधन अचूक था। उन्होंने अपने नियमित और सादे जीवन से वेलनेस का मंत्र दिया। आज के वेलनेस गुरु तो आपसे मोटी रकम वसूलते हैं गांधी तो फ्री ऑफ कास्ट आपको बेहतर और सेहतमंद जीवन का मंत्र देते हैं।

इंदौर में होलकर महाराजा ने गांधी जी को 10 हजार रुपए दान दिए थे

डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने कहा कि जब 1918 में गांधी इंदौर आए थे तो होलकर महाराजा ने उन्हें 10 हजार रुपए दान दिए थे जिसका सुदुपयोग उन्होंने दक्षिण में नागरी प्रचारिणी सभा के जरिए हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए किया था। इंदौर आने पर उनके लिए चार बग्घियों का इंतजाम किया था लेकिन उन्होंने इस पर बैठने से इनकार कर दिया था।

1. सामूहिक प्रार्थना

महात्मा गांधी साबरमती आश्रम में सर्वधर्म प्रार्थना करते थे।उनका मानना था कि सारे धर्म एक ही ओर इशारा करते हैं कि जो हमें सत्य, अहिंसा और मानवीय सेवा की ओर अग्रसर करते हैं। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के व्यक्ति को व्यक्ति की तरह देखा और संवाद में विश्वास किया क्योंकि संवाद के जरिए ही सारी समस्याएं सुलझाई जा सकती हैं।

2. सामूहिक सफाई

गांधी आश्रम में 45 मिनट सामूहिक सफाई करवाते थे। इसमें सभी लोग गैती, फावड़ा, टोकरी और झाड़ू लेकर पूरे परिसर की और यहां तक की संडास की सफाई करते थे। बहुत पहले उन्होंने स्वच्छता का संदेश दे दिया था। मैं इंदौर के लोगों को बधाई देती हूं कि उन्होंने स्वच्छता के लिए श्रेष्ठ काम किया। दिल्ली वालों को इंदौर की स्वच्छता से सीखना चाहिए।

3. सामूहिक भोजन

आश्रम में बापू ने सामूहिक भोजन की व्यवस्था की। एक ही रसोई में भोजन बनता और सब एक साथ भोजन करते। वहां कद्दू बहुत होते थे और हम सेवाग्राम को कद्दूग्राम कहते थे। उबला हुए कद्दू की सब्जी खाते थे। इसके जरिए बापू ने जबान पर नियंत्रण का मंत्र दिया।

4. सामूहिक कताई

महात्मा गांधी ने सामूहिक कताई को सूत यज्ञ कहा है। यानी जितना पहनना है उउतना कातो, उतना कातो जितना पहनना है। यानी इसके पीछे उनकी आत्मनिर्भरता का विचार था। उनके इस विचार को हमें आज के समय में ज्यादा बेहतर ढंग से समझना है।

सिंगर जावेद अली का कॉन्सर्ट 'ऑन व्हील्स' कल

एग्जाम से पहले राइटर्स क्रैम्प से बचिए,